प्रेम होना

बात कठिन मालूम होती है यह सोच कर कि प्रेम कैसी-कैसी दुश्वारियां पैदा करता है। सजगता के साथ प्रेम करना और भय के बगैर रिश्ते बनाना अच्छा तो लगता है लेकिन उसकी शुरुआत कहां से करें?

ओशो कहते हैं, " प्रेम तुम्हारे जीवन में एक सचाई होनी चाहिए न कि कविता, न केवल एक स्वप्न। उसे वास्तविक होना चाहिए। प्रेम को पहली बार अनुभव करने में कभी देर नहीं होती।"

"प्रेम करना सीखो। बहुत कम लोग जानते हैं कि प्रेम कैसे करना। सभी जानते हैं कि प्रेम आवश्यक है, सभी जानते हैं कि प्रेम के बिना जीवन बेमानी है लेकिन वे नहीं जानते कि प्रेम कैसे किया जाए।"

हम यही चाहते हैं लेकिन दुबारा ठेस लगने से डरते हैं।

"प्रेम खतरे से खाली नहीं है। प्रेम करना खतरा मोल लेना है क्योंकि तुम उसे नियंत्रित नहीं कर सकते, वह सुरक्षित नहीं है। तुम्हारे हाथ में नहीं है। उसकी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। वहां कहां ले जाए कोई नहीं जानता। वह कहां ले जाएगा यह भी कोई नहीं जानता।"

पर किसी खास व्यक्ति को खोजना इतना कठिन क्यों है?

"पहले तुम्हें प्रेम को समझना होगा जो कि एक बिलकुल स्वाभाविक घटना है। वह भी तो नहीं हुआ है। पहले तुम्हें स्वाभाविक प्रेम को समझना होगा और फिर उच्च स्तरीय प्रेम को। तो सबसे पहले यह समझ लो कि कभी भी आदर्श स्त्री या आदर्श पुरुष को मत खोजो। यह ख्याल तुम्हारे दिमाग में डाला गया है कि जब तक तुम आदर्श स्त्री या पुरुष को न खोज लो तब तक तुम सुखी नहीं होओगे। तो तुम आदर्श की खोज में लगे रहते हो और और उसे पाते नहीं हो इसलिए दुखी रहते हो।"

" प्रेम में बहना और प्रेम में विकसित होना इसके लिए कोई आदर्श की जरूरत नहीं होती।"

"प्रेम की कोई शर्तें नहीं होतीं, न कोई अगर, मगर। प्रेम कभी ऐसा नहीं कहता कि ये जरूरतें पूरी करो और तब फिर मैं प्रेम करूंगा। प्रेम सांस की तरह है, जब वह घटता है तब तुम सिर्फ प्रेम ही होते हो। इसका सवाल नहीं है कि तुम्हारे पास जो आता है वह पापी है या पुण्यवान। जो भी तुम्हारे करीब आता है, प्रेम की तरंग अनुभव करने लगता है, प्रसन्न होता है। प्रेम बेशर्त दान है, लेकिन वे ही दे सकते हैं जिनके पास है।"

शायद। पर जब एक और संबंध टूटता है, मैं बंद हो जाता हूं।

" संबंध एक ढांचा है और प्रेम का कोई ढांचा नहीं होता। तो प्रेम निश्चय ही संबंधित होता है पर संबंध नहीं बनता। प्रेम क्षण-क्षण जीनेवाली प्रक्रिया है। ध्यान रहे। प्रेम तुम्हारे होने की अवस्था है, संबंध नहीं। प्रेमपूर्ण लोग होते हैं और प्रेम विहीन लोग होते हैं। प्रेम विहीन लोग संबंध बनाकर प्रेमपूर्ण होने का दिखावा करते हैं। प्रेमपूर्ण लोगों के लिए संबंधों की जरूरत नहीं होती, प्रेम काफी होता है।

" प्रेम के संबंध बनाने की बजाय प्रेमपूर्ण व्यक्ति होओ। क्योंकि संबंध एक दिन बनते हैं और दूसरे दिन बिखर जाते हैं। वे ऐसे फूल हैं जो सुबह खिलते हैं और सांझ मुरझा जाते हैं।"

ठीक है लेकिन अगर प्रेम काफी है तो कभी-कभी मुझे किसी के साथ होते हुए भी एकाकी क्यों लगता है?

" इसे गहराई से समझ लेना जरूरी है, यह बहुत अर्थपूर्ण है। प्रेम हमेशा अकेलापन लाता है। अकेलापन हमेशा प्रेम लाता है। वे कभी अलग नहीं होते।"

"लोग ठीक उल्टा समझते हैं। लोग सोचते हैं, जब आप प्रेम हैं तो आप अकेले कैसे हो सकते हैं? वे एकांत और अकेलापन इन दो शब्दों में कोई फर्क नहीं महसूस करते। इसलिए उलझन होती है।

"जब तुम प्रेम में होते हो तो तुम एकाकी नहीं होते, यह सच है। लेकिन जब तुम प्रेम में होते हो तो तुम अकेले होओगे ही, यह उससे भी बड़ा सच है। अकेलापन एक नकारात्मक स्थिति है। अकेलेपन का अर्थ है तुम दूसरे के लिए पुकार रहे हो। अकेले होने का अर्थ है तुम अंधेरे में,

अवसादग्रस्त, निराश हो। तुम भयभीत हो, तुम्हें लगता है तुम पीछे छूट गए, तुम्हारी जरूरत किसी को नहीं है। इससे पीड़ा होती है। अकेलापन एक घाव की तरह होता है।

" एकांत फूल की भांति होता है। मैं जानता हूं, तुम्हारे शब्दकोश कहेंगे कि अकेलापन और एकांत पर्यायवाची हैं; लेकिन वे नहीं हैं। वे सर्वथा अलग चीजें हैं।

" सबसे बड़ी दरिद्रता है प्रेम का अभाव। जिस आदमी ने प्रेम की क्षमता को विकसित नहीं किया वह अपने निजी नर्क में जीता है। जो आदमी प्रेम से भरा है वह स्वर्ग में जीता है। तुम आदमी को एक अनोखे और अद्भुत पौधे की तरह देख सकते हो, ऐसा पौधा जो अमृत और जहर, दोनों ही पैदा करता है। अगर कोई आदमी नफरत में जीता है तो वह जहर की फसल काटता है; अगर वह प्रेम पूर्ण जीता है तो अमृत से सराबोर फूल इकट्ठे करता है।"

सभी उद्धरण ओशो की किताबों से

OSHO

© 2015 OSHO International
Copyright & Trademark Information